www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हर कसौटी पर खरे दीपयज्ञ

शान्ति कुञ्ज
हरिद्वार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हर कसौटी पर खरे दीप यज्ञ

ज्ञान और विज्ञान के भण्डार वेद। वेदों में प्रथम ऋग्वेद। ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में यज्ञाग्नि को पुरोहित स्तर की मान्यता दी गई है और कहा गया है कि वह यजनकर्ताओं को रत्नराशि के समतुल्य बहुमूल्य लाभ प्रदान करता है। अग्नि की प्रेरणा–प्रशिक्षण यह है कि वह चिनगारी तुल्य लघुकाय होते हुए भी दावानल सदृश विशालकाय बन जाने की क्षमता से भरी-पूरी होती है। ऊर्जा और आभा का निरंतर परिचय देती है। निकटवर्ती कुछ भी क्यों न हो; उसे अपने समतुल्य बना लेती है। यज्ञाग्नि की अभ्यर्थना इसीलिए की जाती है कि यह विशेषताएँ, विभूतियाँ याजक को भी उपलब्ध होती रहती हैं। इसलिए समय-समय पर प्रगति प्रयोजनों और अवरोधों के निराकरण के लिए छोटे-बड़े यज्ञ होते भी रहे हैं।

असुरता का वर्चस्व मिटाने और सतयुग की वापसी का सरंजाम जुटाने के लिए रामराज्य की स्थापना हेतु भगवान राम ने दस अश्वमेध यज्ञ किए थे, जिनकी स्मृति में काशी–दशाश्वमेध-घाट अभी भी साक्षी रूप में विद्यमान है। छिन्न-भिन्न, अस्तव्यस्त भारत को विशाल भारत बनाने के लिए महाभारत योजना सम्पन्न हुई। उस अवसर पर भगवान कृष्ण के तत्वावधान में पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ सम्पन्न किया था। उससे जन-जन को सदाशयता अपनाने की प्रेरणा भी मिली और अवांछनीयता को पनपने न देने वाले पराक्रम को अपनाने की क्षमता भी। राजतंत्र को सुव्यवस्थित रखने के लिए राजसूय यज्ञ और चरित्र एवं वर्चस्व को सक्षम बनाये रखने के लिए वाजपेय यज्ञों की परम्परा भी समय-समय पर अपनायी जाती रही है। उसमें याजकों के लिए अनेकानेक लाभ भी समाविष्ट हैं। वातावरण को प्रदूषण रहित बनाने के लिए यज्ञ परिशोधन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और परिवर्धन की प्रक्रिया भी सम्पन्न करते हैं। यज्ञ से प्राण वर्षा होने की बात प्रसिद्ध है, जिससे जीव-जन्तु, वनस्पति-समुदाय एवं मानवी सशक्तता का अभिवर्धन भी होता है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण भी बनता है। युग परिवर्तन की इस अति महत्त्वपूर्ण घड़ी में भी दैवी निर्देशन पर एक करोड़ याजकों द्वारा एक लाख दीप यज्ञों की योजना बनी है; ताकि इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य का अवतरण भली प्रकार हो सके। पिछले दिनों बन पड़े अनाचारों का परिशोधन भी इस संकल्प में नियोजित है। वायुमंडल का प्रदूषण और अदृश्य जगत की विषाक्तता का निवारण भी इसी के साथ समाहित है।

कभी बहुत खर्च से-बहुत साधनों से सम्पन्न होने वाले बड़े यज्ञ भी होते थे, पर आज की परिस्थितियों को देखते हुए उसका कलेवर छोटा कर दिया गया है, फिर भी भट्ठी में प्रज्वलित बड़ी आग का गुण-धर्म छोटी चिनगारी में भी यथावत् पाया जाता है।

यज्ञ में मात्र मंत्रों का उच्चारण तथा शाकल्य ही सब कुछ नहीं है। साथ ही अधिकाधिक संख्या में भावचेतना सम्पन्न याजकों का भी सम्मिलित होना आवश्यक है। प्राण-चेतना की बहुलता से ही मंगलमय वातावरण का सृजन होता है। शाकल्य को तो छोटे रूप में भी लिया जा सकता है। विशाल गंगा का जल छोटी शीशी में लेकर उस गंगाजली की भी घरों में पूजा होती है और श्रद्धा के अनुरूप उसका प्रतिफल भी मिलता है। सूर्य को अर्घ्य अंजुलि भर पानी से भी दिया जा सकता है। इसी प्रकार हवन सामग्री की आवश्यकता अगरबत्ती से और घृत-आहुतियों का काम दीप प्रज्वलन से भी चल जाता है। इन दिनों मँहगाई, व्यस्तता और अश्रद्धा के वातावरण में दीपयज्ञों से ही वह काम भली प्रकार चल रहा है, जो किसी समय, सुसम्पन्नता के दिनों में प्रचुर साधन सामग्री जुटाने से हुआ करता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यज्ञ के साथ शक्ति संचय भी जुड़ा हुआ है। विश्वामित्र ने युग परिवर्तन के समय की अनेकों आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, वह यज्ञ किया था, जिसमें राम-लक्ष्मण को सुरक्षा हेतु बुलाया गया था। उनने युद्ध-कौशल तो सीखा ही, साथ ही बला और अतिबला विद्याओं का– गायत्री और सावित्री की शक्तियों का प्रयोग भी सीखा, जिसके आधार पर शिव धनुष तोड़ने, लंका के अनाचार-केन्द्र को बिस्मार करने, अंगद, हनुमान, नल-नील जैसे सशक्तों का सहयोग पाने और राम राज्य को धर्मराज्य के रूप में स्थापना कर सकने की क्षमता उपलब्ध की। इससे मिलते-जुलते लाभ वे लोग भी उपलब्ध कर सकते हैं. जो दीपयज्ञों की क्रिया-प्रक्रिया के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ते हैं।

यज्ञ एक कृत्य ही नहीं है, उसके साथ उच्चस्तरीय सद्ज्ञान का प्रेरणा प्रकरण भी जुड़ा हुआ है। यज्ञ का शब्दार्थ है—पुण्य-परमार्थ। अपनी उपयोगी वस्तुओं को लोकहित के लिए वितरित कर देने की प्रक्रिया ही यज्ञ-कृत्य में अपनायी जाती है। उससे यह शिक्षा और प्रेरणा भी मिलती है कि हम स्वार्थी, कृपण, निष्ठुर, विलासी बन कर न रहें, वरन् सबके हित में अपना हित समझें।

यज्ञशास्त्र के व्याख्याकारों ने उसे देव पूजन, दान और संगति-करण का प्रतीक भी माना है। देवपूजन अर्थात् परमार्थपरायण प्रतिभाओं का संवर्धन, जैसा कि शान्तिकुञ्ज की सत्र-शिक्षण योजना के अन्तर्गत चल रहा है। दान की नियमितता जैसे कि दो घंटे समय और दस पैसे नित्य के अनुदान निकालने का उपक्रम प्रज्ञापुत्रों द्वारा अपनाया जा रहा है। संगतिकरण अर्थात् संगठन। जैसा कि प्रज्ञामंडलों, प्रज्ञाकेन्द्र और यज्ञ आयोजनों के माध्यम से युगान्तरीय चेतना के आलोक वितरण के साथ-साथ इन दिनों तत्परता-पूर्वक चल रहा है।

गायत्री और यज्ञ को माध्यम इसलिए बनाया गया है कि इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दोनों उपचारों और निर्धारणों को विश्वव्यापी निर्धारणों के अनुरूप माना जा रहा है। गायत्री में सद्बुद्धि की अभ्यर्थना है। इसी को विचारक्रांति कहा गया है–लोकमानस के परिशोधन की प्रक्रिया भी। गायत्री को माता के रूप में मान्यता दी गयी है और उसकी अभ्यर्थना को प्राथमिकता भी दी गयी है। इसका सीधा संकेत यह भी है– अगली शताब्दी मातृशक्ति की प्रमुखता लेकर आरही है। इसे पिछड़ी हुई आधी जनसंख्या का अभ्युदय भी कह सकते हैं। सद्बुद्धि अर्थात् दूरदर्शी विवेकशीलता। इसी को अपनाने से प्रस्तुत अनेकानेक मूढ़ मान्यताओं और दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण भी होगा। अगले दिनों गायत्री को ही सबसे छोटा किन्तु सबसे सारगर्भित धर्मशास्त्र माना जाना है। इसके चौबीस अक्षरों में से प्रत्येक में उसी स्तर की प्रेरणाएँ और क्षमताएँ भरी पड़ी हैं। २४ अवतार अर्थात् गायत्री के २४ अक्षर। २४ देवता अर्थात् गायत्री में सन्निहित अलौकिक रहस्य। गायत्री के २४ अक्षर अर्थात् प्रमुख ऋषि-तपस्वी। इनमें से प्रत्येक के पास ऋद्धि-सिद्धियों के भण्डार भरे पड़े हैं। २४ देवियाँ अर्थात् गायत्री उपासना के साथ जुड़ी हुई अलौकिक विशेषतायें। दीपयज्ञों में इसी गायत्री महाशक्ति से आकाश गुंजित किया जाता है और उसे व्यापकरूप से सर्वव्यापी बनाया जाता है।

यज्ञ अर्थात् अग्नि की अभ्यर्थना। वह अभी भी किसी न किसी रूप में सभी प्रमुख धर्म-सम्प्रदायों में अपनायी एवं प्रयुक्त की जाती है। नयायुग यज्ञयुग होगा, अर्थात् हर व्यक्ति ऊर्जा सम्पन्न, अर्थात् ओजस्वी, तेजस्वी, साहसी होगा। प्रकाश अर्थात् शोभा, सुसंस्कारिता, यशस्वी गरिमा। याज्ञिकों में से प्रत्येक के मन-मानस में यह श्रद्धा उगाई जा रही है कि वे मात्र ऐसी रीति अपनाते हुए जीवन जियें, जिनकी चर्चा सुगन्धि-वितरण के रूप में सर्वत्र हो। यशस्वी बनें और अपने कर्तृत्व को–व्यक्तित्व को–अनुकरणीय–अभिनन्दनीय बनाकर रहें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दीपयज्ञों का दार्शनिक तत्त्वज्ञान ऐसा है, जिसकी प्रभाव-प्रेरणा को यदि गंभीरतापूर्वक अपनाया जा सके, तो वैयक्तिक जीवन देवोपम दिशा अपनाने के लिए अग्रसर हो सकता है, जीवन यज्ञ के रूप में विकसित करने वाली संजीवनी विद्या की रीति-नीति से ओत-प्रोत कर सकता है। यज्ञ दर्शन में सामाजिक परम्पराओं, प्रथाओं एवं आचार-संहिताओं का ऐसा परिपालन हो सकता है, जिससे इसी धरती पर स्वर्ग उतरे और मनुष्य में देवत्व उभरता हुआ दृष्टिगोचर हो। दीपयज्ञ के साथ जुड़ी हुई दार्शनिकता दीपक की तरह ज्योति वितरण को केन्द्र बनाने के लिए हर किसी भावनाशील को प्रेरित करती है। यदि यही श्रद्धा अपनायी जा सके, तो समझना चाहिए कि तुच्छ समझे जाने वाले मनुष्य पर देवत्व की छाया उतरी। प्रतिभा उभरी। शक्ति-सत्ता के आधार पर उसकी समर्थता असंख्य गुनी बढ़ चली। इसे दैवी–सत्ता द्वारा की गयी अमृत वर्षा ही कह सकते हैं, जिसके आधार पर व्यक्ति और समाज को सर्वतोमुखी प्रगति का सुयोग मिल सकता है। प्रदूषण और विषाक्तता से जो अव्यवस्था सब ओर फैली है, उसका अन्त अब निकट आ गया है।

दीपयज्ञ आयोजनों के साथ जुड़ने वाली गतिविधियाँ सर्वतोमुखी उत्कर्ष का वातावरण विनिर्मित करती हैं और सम्मिलित होने वालों का ऐसा पथ-प्रदर्शन करती हैं, जिससे वे नेतृत्व की–मार्ग-दर्शन की क्षमता हाथों-हाथ उपलब्ध कर सकें और साधारण समझे जाने वाले जनसमुदाय के बीच अपनी श्रम-साधना के कारण असाधारण समझे जाने लगें। समीपवर्ती क्षेत्र का प्रतिनिधित्व एवं मार्गदर्शन कर सकें। सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन एवं दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन में अपनी सामर्थ्य, गौरव-गरिमा का परिचय दे सकें।

जहाँ एक दीपयज्ञ सम्पन्न होता है, वहाँ के लोग सरलता, सुगमता से उभरती हुई प्रेरणाओं का अवलम्बन लेते हुए अपने-अपने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यहाँ वैसे ही आयोजन करने के लिए उल्लसित होते हैं–मिल-जुलकर काम करने को भी । दो-दो रोटियाँ हर घर से लेने पर प्रीतिभोजों की एक ऐसी परिपाटी विकसित होती है, जिससे किसी भी सत्प्रयोजन के लिए सत्कार भरे सहभोज की व्यवस्था सहज ही बन जाती है और जाति-पाँति के नाम पर चलने वाली ऊँच-नीच मान्यताओं की जड़ों पर कुठाराघात होता है । विवाह-शादियों में होने वाले अपव्यय को अपने देश की दरिद्रता का मूल-कारण समझा जाता है । इस कुप्रथा को अपने परिकर में चरितार्थ न होने देने का संकल्प लेनेवाले याजक पिछड़ेपन के प्रमुख कारण का बहिष्कार करने में अपनी दूरदर्शिता को उभारते हैं । इसीप्रकार नशेबाजी, अपव्यय का प्रमुख कारण समझी जाने वाली फैशन-परस्ती को भी छोड़ने के लिए बाधित होते हैं ।

दीपयज्ञ के माध्यम से विचारशीलों की जो एकजुटता उत्पन्न होती है, उसको दिशा देने के लिए "शिक्षा संवर्धन" का, विशेषतया प्रौढ़ शिक्षा का, साप्ताहिक सत्संगों का, जो शुभारम्भ चल पड़ता है, उसके यथावत् चलते रहने पर सामाजिक प्रगतिशीलता की झाँकी हर किसी को मिलती है । सर्वतोमुखी लोकशिक्षण का दूसरा प्रयोग ऐसा है, जिसे पिछड़ेपन के अन्त का सुनियोजित उपचार माना जा सकता है । ज्ञानरथ जब गली-मुहल्लों में घूमते हैं और अपने साथ जुड़े हुए टैपरिकार्डर, लाउडस्पीकर द्वारा जन-जन के मन-मन तक प्रगतिशीलता की पक्षधर प्रेरणाएँ पहुँचाते हैं, तो उनके सहारे प्रखर-वक्तृता और मर्मस्पर्शी संगीत गायन के लाभ से रास्ते चलते लोगों का मन हुलसने लगता है । वातावरण में प्रखर-प्रेरणा भरने का उपचार कदाचित् ही अब तक कहीं किसी ने प्रयुक्त किया हो । इससे स्वाध्याय और सत्संग की दोनों ही प्राणवान प्रेरणाएँ बन पड़ती हैं । अलख जगाने की यह प्रक्रिया नवयुग की आधारशिला रखने में असाधारण रूप से सहायक होती है ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सर्वविदित है कि शान्तिकुञ्ज से इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल-भविष्य का जो असाधारण आन्दोलन देश के कोने-कोने में, विश्व-भर में चलाया जा रहा है, उसकी सफलता के लिए शान्तिकुञ्ज में जहाँ शिक्षण-सत्र अनवरत रूप से चलने की परम्परा नयी योजना के साथ चल पड़ी है, वहाँ इस मिशन के सूत्र-संचालक ने विगत वसंत पर्व से एक अतिरिक्त तपश्चर्या आरम्भ की है। एकान्त सेवन के साथ अनेक कष्ट-साध्य व्रत-संकल्पों का निर्वाह हो रहा है। इसी के साथ यह संकल्प भी उभरा है कि युग संधि के इन दस वर्षों में एक लाख दीपयज्ञ आयोजन करने सृजन संगठन–करने के साथ-साथ एक करोड़ प्रतिभाओं को इस महान प्रयोजन के लिए भागीदार बनाया जायेगा। आरम्भ में यह महान संकल्प वर्तमान केन्द्र में ही सम्पन्न किये जाने की योजना थी, पर अब नया निर्धारण यह उभरा है कि प्रत्येक प्रज्ञा केन्द्र में सहस्र-वेदी दीपयज्ञों के माध्यम से यह उपक्रम व्यापक बनाया जाय। इस नव निर्धारण की प्रति-क्रिया पर विचार करने वाले एक स्वर से यह कहने लगे हैं कि देश का कोई कोना–भारत भूमि का कोई क्षेत्र, कोई व्यक्ति ऐसा न बचेगा, जो नवयुग के अनुरूप नवजीवन की–नव सृजन की प्रक्रिया के साथ जुड़ न जाय। इस प्रकार जहाँ भी दीपयज्ञ सम्पन्न हो रहे हैं, वहाँ एक प्रकार से इस अभूतपूर्व, ऐतिहासिक, अनुपम प्रक्रिया को सफल सर्वांगपूर्ण बनाने के लिए साहस भरे उदार सहयोग प्रस्तुत करने का पुण्य लाभ अर्जित किया जा रहा है।

ऐसी दशा में जहाँ भी, जिनने भी दीपयज्ञ सम्पन्न करने और उस श्रृंखला को आगे बढ़ाने का व्रत धारण किया है, उन्हें सच्चे अर्थों में युग चेतना के अग्रदूत कहा जा सकता है। इस समुदाय की जितनी प्रशंसा की जाय, उतनी ही कम है।

मुद्रक:– युगान्तर चेतना प्रेस. शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org